प्रभु श्रीराम

चले ध्रुव शुभ श्रेय पथ पर जीव यह निर्बाध ।
चलें निर्भय जिन्हें सच्ची पूर्णता की साध ।
मिटाने कण्टक जगत के प्रकट कृत अपराध ।
अवतरित हरि अवनि पर धृत धाम शक्ति अगाध । 1 ।

त्याग तप धृति शौर्य, रखना मित्रता का मान ।
वैरि के भी गुणों का करना हृदय से गान ।
जनक आज्ञा पालना गुरु प्रति विनय का भाव ।
विविध वर्गों में जगाना अहेतुक सद्भाव । 2 ।

नीति पथ अनुगामिता सब जीव पर समदृष्टि ।
जलद सम निरपेक्ष रह सब पर कृपारस वृष्टि ।
न्याय प्रति आग्रह सदा अन्याय पर ही रोष ।
शरण आये के न कुछ भी देखना गुण-दोष । 3 ।

प्रणय की शुचिता पुरंध्री प्रति अनूठा मान ।
मातृ भू प्रति प्रेम निज कुल धर्म पर अभिमान ।
भक्त वनितोद्धार निर्बल आर्त का परित्राण ।
प्रण सुपालन भले आपद्ग्रस्त हों निज प्राण । 4 ।

युद्ध में विक्रम अमित माया निवारण ज्ञान ।
असुरगण उच्छेद हित करना सतत अभियान ।
स्वयं जा रिपुभूमि पर करना विषम संहार ।
लोकमंगल हेतु हरना भुवन का गुरु भार । 5 ।

मात्र निज आचार से शिक्षित किया यह लोक ।
पथ दिखाया श्रेय का हो जीव यह गतशोक ।
वह सनातन मार्ग जिस से लभ्य शाश्वत धाम ।
मात्र जिस पर सञ्चरण से प्राप्त होते राम । 6 ।

मनुज मन पाता जहां पर पहुंच चिर विश्राम ।
जान जाता जीव आया लौट कर निज धाम ।
चित्त निर्मल उर सुशीतल मन विगत सब काम ।
लगा जैसे दैन्य दुख पर अमिट पूर्ण विराम । 7 ।

भव रजनि का तिमिर होता तिरोहित सम्पूर्ण ।
तर्क के दृढ़ अश्म निर्मित दुर्ग होते चूर्ण ।
छिन्न होते मात्र क्षण में संशयों के जाल ।
त्वरित थमतीं मन जलधि की वृत्तियां उत्ताल । 8 ।

प्रकट होती नव मनीषा उषावत शुभकान्ति ।
विविधता पार्थक्य मिटते भागती सब भ्रान्ति ।
ओस कण संचय वृथा जब मिल गया हो सिन्धु ।
दीप लेकर पथ गमन क्यों जब उदित हो इन्दु । 9 ।

एक नव आनंद धारा प्रवाहित अविराम ।
अवतरित होती प्रभामय दिव्यता अभिराम ।
कलुष सब निःशेष होते द्वन्द्व खोते रूप ।
ज्ञात होता सकल भव फिर आत्म का प्रतिरूप । 10 ।

जगत बनता नन्दनोपम अचिर ही आराम ।

हृदय को ही बना लेते अनामय निज धाम ।

त्रिविध तापों का तृषा का सर्वथा उपराम ।

कर परम कृतकृत्य अपनाते सदय प्रभु राम । 11 ।

२२-०१-२०२४ शिव कुमार मिश्र

भोपाल